भाग–1

बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान क्या है?

1.1 बुनियादी साक्षरता क्या है?

बुनियादी साक्षरता से हमारा तात्पर्य भाषा के उन बुनियादी कौशलों से है, जो बच्चों के सीखने की आधारशिला तैयार करते हैं। इसमें शामिल हैं :

मौखिक भाषा का विकास
समझ के साथ सुनना, विभिन्न उद्देश्यों के लिए दूसरों के साथ बातचीत में जुड़ना व स्वयं को अभिव्यक्त करना

ध्वनि बोध व डिकोडिंग
भाषा की ध्वनियों को पहचानना व उन्हें अक्षरों से जोड़ना, अक्षर–ध्वनि संबंध व प्रिन्ट के ज्ञान का उपयोग करते हुए शब्द पहचानना

पठन
धाराप्रवाह रूप से यानी सटीकता, गति, भाव, समझ के साथ पढ़ना और पाठ की गहरी समझ बनाना– अर्थनिर्माण, विश्लेषण करना, अनुमान लगाना, निष्कर्ष निकालना, आदि

लेखन
स्वयं को लिखित रूप में अभिव्यक्त कर पाना – शुरुआत में चित्रों के माध्यम से व फिर धीरे–धीरे व्यवस्थित होते शब्दों व वाक्यों के ज़रिए

बुनियादी साक्षरता में तर्क सहित चिंतन एक महत्वपूर्ण आधार है।

भाषा के ये कौशल अन्य सभी विषयों को सीखने के साथ–साथ भविष्य में एक नागरिक के रूप में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए भी आवश्यक हैं।

1.2 बुनियादी संख्या ज्ञान क्या है ?

बुनियादी संख्या ज्ञान से तात्पर्य तार्किक चिंतन व दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए गणितीय कौशलों के प्रयोग से है । इसमें शामिल है:

संख्या पूर्व अवधारणाएँ
वर्गीकरण, एक–एक की संगति, क्रम में लगाना, तुलना करना, छोटा–बड़ा, आदि

संख्या ज्ञान व संक्रियाएँ
संख्याओं की गहरी समझ– मात्रा, स्थानीय मान, तुलना, क्रम, जोड़, घटा, गुणा, भाग व दैनिक जीवन में उपयोग

आकृतियाँ व स्थानिक समझ
आकार, दिशा, स्थान के संदर्भ में अपनी दुनिया को समझना, 2–D व 3–D आकारों को समझना

मापन
दैनिक जीवन के संदर्भ में वस्तुओं की लंबाई, वज़न, धारिता, ताप और समय को मापना

पैटर्न
वस्तुओं, आकारों, अंकों, आदि से बने विभिन्न पैटर्न को समझना, विस्तार करना, नए पैटर्न बनाना व उनका नियम व्यक्त करना

आँकड़ों को व्यवस्थित करना
सामान्य जीवन से जुड़े आँकड़ों को जुटाना, प्रस्तुत करना, विश्लेषण करना

गणितीय संप्रेषण
गणितीय भाषा से जुड़ी शब्दावली, प्रतीकों का प्रयोग कर पाना

गणितीय सोच व कौशल
तर्क देना, सामान्यीकरण, समस्या समाधान, अनुमान लगाना, आदि का विकास व दैनिक जीवन में उपयोग

ये सभी कौशल बच्चों में तर्क करने व समस्या समाधान की क्षमताओं को बढ़ावा देते हैं।

बुनियादी गणित की दक्षताएँ दैनिक जीवन में उपयोगी होने के साथ–साथ आगे की कक्षाओं में गणितीय अवधारणाओं व दूसरे विषयों, जैसे कि विज्ञान को बेहतर समझने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

1.3 बुनियादी कौशल सीखने के मायने– समय पर महारत हासिल करना

विचार करें!

- जब हम कहते हैं कि बच्चे बुनियादी कौशल सीखें तो हम किस स्तर की अपेक्षा करते हैं?
- क्या केवल एक न्यूनतम स्तर प्राप्त करना काफ़ी होगा? या उन्हें इन कौशलों में निपुणता हासिल करनी होगी?

आइए, इसे एक उदाहरण से समझें :

ऑडियो

तीन बच्चे एक पाठ को पढ़ रहे हैं। आइए इन्हें सुनते हैं।

ऑडियो सुनने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

प्रत्येक बच्चे को सुनते समय ध्यान दीजिए कि –

– वह किस गति के साथ पाठ को पढ़ रहा है ?

– क्या वह पाठ को समझ पा रहा होगा ?

रोहन

कविता

अज़हर

गतिविधि

आपके अनुसार इन तीनों बच्चों में से किस बच्चे को पाठ समझ आया होगा?

- रोहन
- अज़हर
- कविता

(सही विकल्प : अज़हर)

विचार करें!

- आपने बच्चों के पठन के बारे में क्या निष्कर्ष निकाला ?
- क्या हम कह सकते हैं कि बच्चों के न्यूनतम स्तर पर काम करना काफी होगा ? या निपुणता प्राप्त करना ज़रूरी है ?

यहाँ हम देख सकते हैं कि

सभी बच्चे कुछ हद तक पढ़ने की कोशिश ज़रूर कर रहे थे, पर केवल अज़हर ही पाठ को प्रवाह के साथ पढ़ पा रहा था। जब पाठ के बाद, इन बच्चों से बातचीत की गई तो देखा गया कि केवल अज़हर ही पाठ से जुड़े सवालों के जवाब आत्मविश्वास से दे पाया।

रोहन और कविता जो ऐसा नहीं कर पाए वे अपने कक्षा/स्तर के अन्य पाठों को पढ़ने व उनके साथ काम करने में सक्षम नहीं होंगे, जो कि सभी विषयों को सीखने के लिए अनिवार्य है। लिखे गए पाठ को हम तभी समझ पाते हैं जब हम प्रवाह के साथ पढ़ने में सक्षम होते हैं। अर्थात, समझ के साथ पढ़ने के लिए ज़रूरी है कि बच्चे प्रवाह के साथ पढ़ें।

बच्चे किसी भी विषय के पाठ के साथ तभी काम कर सकते हैं जब वे पाठ को समझें। यह तभी संभव है जब बच्चों में प्रवाह के साथ पढ़ने व समझने के कौशल विकसित हों। इसलिए, कक्षा 3 के अंत तक पठन के संदर्भ में ज़रूरी है कि बच्चे पाठ को प्रवाहपूर्ण तरीके से व समझ के साथ पढ़ें।

पठन की ही तरह, सभी बुनियादी कौशलों के लिए अनिवार्य है कि बच्चे कक्षा–स्तरानुसार, यानी समय पर उनमें महारत या निपुणता हासिल करें। इन कौशलों में निपुणता होने पर ही बच्चे अगली कक्षाओं में सभी विषयों को समझने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।

यह समय पर होना क्यों ज़रूरी है, इसके कारणों को हम अगले भाग में विस्तार से समझेंगे।

अब तक हमने बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान क्या है, यह समझा। अगले भाग में हम जानेंगे कि बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के कौशल क्यों महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन इससे पहले आइए एक बार दोहरा लें कि अब तक हमने क्या जाना।

गतिविधि

इकाई में अब तक बनी समझ के अनुसार बताइए कि कौन से कथन सही हैं या गलत।

1. बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान सीखने का अर्थ है कि बच्चे समय पर अपनी कक्षा के अनुरूप इन दक्षताओं पर निपुणता हासिल कर लें।
2. बुनियादी साक्षरता में केवल पठन व लेखन के कौशल शामिल हैं।
3. बुनियादी साक्षरता का अर्थ है समझ के साथ पढ़ पाना ।
4. बुनियादी संख्या ज्ञान में गणितीय अवधारणाओं, जैसे कि, संख्याओं, संक्रियाओं, माप, आदि व गणितीय सोच का दैनिक जीवन में उपयोग शामिल है ।

विकल्प 1 और 3 सही हैं। 2 और 4 गलत हैं।

भाग–1 के मुख्य बिंदु

- 1. बुनियादी साक्षरता में मौखिक भाषा, डिकोडिंग, पठन व लेखन के कौशल शामिल हैं।
- बुनियादी संख्या ज्ञान में गणितीय अवधारणाओं, जैसे कि, संख्याओं, संक्रियाओं, माप, आदि व गणितीय सोच का दैनिक जीवन में उपयोग शामिल है।
- बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान सीखने का अर्थ है कि बच्चे समय पर अपनी कक्षा के अनुरूप इन दक्षताओं पर निपुणता हासिल कर लें।
- बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के कौशल कक्षा 3 के अंत तक विकसित किए जाने चाहिए।